पुरोवाक्

पुरोवाक्

आज़ादी के पश्चात् देश में उत्पन्न वैचारिक संकट ने कहानी के क्षेत्र में नवीन चेतना को जन्म दिया । विभाजन और मोहभंग की स्थिति के कारण जीवन में असंगतियाँ और विघटनशील प्रवृत्तियाँ पैदा हुई । भारतीय जीवन की इस स्वरूप का तत्कालीन साहित्यकारों ने बहुत बारीकी से चित्रण किया है ।

भारत की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी कथा-साहित्य में सन् १९५० के आस-पास उभरा 'नयी कहानी' का आन्दोलन आधुनिक जीवन की जटिल वास्तविकता की मार्मिक अभिव्यक्ति करने में सक्षम है । 'नयी कहानी' जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करती है । आज के मनुष्य की नियति, उसकी दुर्दशा, यौन-भावना, व्यक्तिगत संघर्ष, अकेलापन, अजनबीपन, संत्रास, विद्रोह की भावना, मूल्य विघटन आदि 'नयी कहानी' के विषय हैं ।

बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार गजानन माधव मुक्तिबोध 'नयी कविता' के प्रमुख हस्ताक्षर हैं । वे न केवल एक कवि हैं बल्कि कहानीकार, निबन्धकार, आलोचक, पत्रकार, संपादक और समीक्षक भी हैं । इसके अलावा 'साहित्यिक डायरी' जैसी नवीन विधा के जन्मदाता भी हैं ।

मुक्तिबोध को कवि के रूप में ही ज़्यादा मान्यता मिली है, 'कहानीकार मुक्तिबोध' तो लगभग उपेक्षणीय ही रहा है । वस्तुत: मुक्तिबोध की कविताएँ ही नहीं, कहानियाँ भी अपने समकालीनों से पृथक समकालिक बोध की माँग करती हैं । मुक्तिबोध में यथार्थ को गहराई से देखने की दृष्टि थी, जिससे उनकी कहानियों के माध्यम से पूरे युग का यथार्थ हमारे सामने आ जाता है - अपनी तीव्रता और सघनता के साथ ।

खेद की बात है कि मुक्तिबोध की कहानियों पर अभी तक स्वतन्त्र रूप से कोई आलोचनात्मक कार्य नहीं हुआ है । छिट-पुट रूप से एकाध पत्रिकाओं एवं दो-तीन आलोचनात्मक पुस्तकों में उनकी कुछ कहानियों का जिक्र अवश्य मिल जाता है जो मेरे

विचार से एक प्रतिभाशाली हस्ती के 'कहानीकार-व्यक्तित्व' को प्रकाश में लाने के लिए पर्याप्त नहीं है । अत: मैंने उनकी कहानियों पर शोध करने का निश्चय किया । मेरे लिये यह अवश्य ही एक साहसपूर्ण कार्य है तथापि ईश्वर की कृपा से तथा अपने माता-पिता एवं गुरूजनों के आशीष से मैं इस रूप में इस शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत कर सकी हूँ ।

''गजानन माधव मुक्तिबोध की कहानियाँ : एक अध्ययन'' मेरा शोध विषय है । अध्ययन की सुविधा के लिए इसके छ: अध्याय निर्धारित किए गए हैं -

पहला अध्याय है *''आधुनिक हिन्दी कहानी : एक परिदृश्य ''*। हिन्दी कहानी का एक निश्चित आरम्भ सन् १९०० से माना जाता है । मैंने प्रसाद एवं प्रेमचन्द जैसे महान् कहानीकारों की कहानियों की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए नयी कहानी तक की कथा-यात्रा का प्रतिपादन किया है । इस अध्याय में मनोवैज्ञानिक एवं समाजवादी कहानियों के प्रमुख हस्ताक्षरों के उल्लेख के साथ-साथ 'नई कहानी' की मुख्य प्रवृत्तियों की ओर भी संकेत किया है ।

दूसरा अध्याय *''गजानन माधव मुक्तिबोध : व्यक्तित्व और कृतित्व ''*है। इसमें मुक्तिबोध के बहुआयामी व्यक्तित्व का अध्ययन प्रस्तुत है । साथ ही उनकी कृतियों में उभरने वाले सृजनात्मक व्यक्तित्व का विश्लेषण भी किया गया है । मुक्तिबोध के व्यक्तित्व एवं रचना-व्यक्तित्व को प्रकाश में लाते हुए उनकी सामाजिक, राजनीतिक तथा साहित्यिक मान्यताओं पर भी रोशनी डाली गयी है ।

तीसरे अध्याय *''मुक्तिबोध की कहानियों में सामाजिक चेतना''* में मुक्तिबोध की कहानियों में उभरनेवाली सामाजिक चेतना को उकेरा गया है । किसी भी रचनाकार की सामाजिक चेतना के निर्माण में समसामयिक यथार्थ के ज्ञान एवं यथार्थ-दृष्टि के विकास का बहुत महत्व है । मुक्तिबोध मूलत: सामाजिक यथार्थ दृष्टि से सम्पन्न रचनाकार है । उनकी कहानियाँ सामाजिक चेतना के भीतर समाहित उनकी व्यक्ति-दृष्टि की सशक्त अभिव्यक्ति है ।

चौथे अध्याय *''मुक्तिबोध की कहानियों में राजनीतिक चेतना''* में उनके राजनीतिक दृष्टिकोण पर विचार किया गया है । साहित्यकार के जीवन एवं साहित्य पर युगीन परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है, जिससे उसका राजनीति से अनिवार्य सम्बन्ध हो जाता है । मुक्तिबोध का रचना-काल परिस्थितियों की उथल-पुथल का काल था । दोनों विश्वयुद्धों की भीषण वीभत्सता एवं युद्धजनित बर्बरता, पैशाचिकता, असभ्यता आदि को वे देख चुके थे । इन घटनाओं एवं परिस्थितियों का गहरा प्रभाव उनके जीवन पर पड़ा । इसलिए उनकी रचनाओं में शासनतंत्र की बढ़ती निरंकुशता उसके घिराव-फसाव, उससे जुड़े लोगों की स्वार्थपरता एवं अवसरवादिता आदि साफ दिखलाई पड़ती है । उपर्युक्त विचार बिन्दुओं के आधार पर मुक्तिबोध की कहानियों की राजनीतिक चेतना का अध्ययन किया गया है ।

पाँचवाँ अध्याय *''मुक्तिबोध की कहानियों की शिल्पगत प्रवृत्तियाँ''* है । कथाकार का सामाजिक बोध और उसकी प्रगति चेतना जब कथ्य को प्रभावित करती है तो संवेदना का नया आयाम उभरता है और कथ्य के साथ-साथ शिल्प में भी परिवर्तन होता है । मुक्तिबोध की कहानियों का शिल्प अन्य कहानिकारों की अभिव्यक्ति पद्धति से बिल्कुल भिन्न है । उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति के लिए कभी फैंटेसियों, बिम्बों, प्रतीकों तथा मिथकों का सहारा लिया तो कभी विशेषणों, पदबन्दों एवं मुहावरों का । मुक्तिबोध की भाषा भी अपनी विचारधारा की विशिष्टता के अनुरूप नितान्त मौलिक है । इस अध्याय में उनकी कहानियों की शिल्पगत विशेषताओं का उल्लेख किया गया है ।

छठे अध्याय *''उपसंहार''* में शोध-प्रबन्ध के अध्ययन के निष्कर्षों पर विचार किया गया है और कहानीकार के रूप में मुक्तिबोध की कहानियों का मूल्यांकन किया गया है ।

प्रस्तुत शोध-कार्य मेरे प्रिय गुरुवर डॉ.पी.वी.विजयन (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय) के स्नेहमय मार्गदर्शन तथा आशीर्वाद से संपन्न हुआ है । उनके प्रोत्साहन और पथप्रदर्शन के लिए 'कृतज्ञता' शब्द

कुछ औपचारिक-सा लगता है, इसलिए मैं उनकी सेहत तथा दीर्घायु के लिए ईश्वर से दुआ माँगती हूँ । कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ.एन. मोहनन के प्रति मैं तहे दिल से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने व्यस्त रहते हुए भी मेरे विषय चयन से लेकर लेखन कार्य की पूर्ति तक मुझे पग-पग पर बहुमूल्य निर्देशन एवं प्रेरणा दी है । कोचिन विश्वविद्यालय के अन्य प्राध्यापकों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मेरी जिज्ञासाओं एवं समस्याओं के समाधान में अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया ।

श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलसचिव तथा हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.वी.के. अब्दुल जलील, रीडर डॉ.सुधा बी. एवं अन्य प्राध्यापकों के प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता अर्पित करती हूँ जिनसे मुझे काफी प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला है ।

श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय तथा कोचिन व विज्ञान प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय कर्मचारियों को भी मैं धन्यवाद देती हूँ, जिनके सहयोग से मुझे शोध के लिए आवश्यक किताबें एवं सामग्री प्राप्त हुईं ।

प्रस्तुत शोध कार्य के प्रारम्भ से लेकर उसके समापन तक मेरे पति व बच्चों तथा मेरी माता जी व भाईयों से मुझे स्नेहिल सहयोग तथा मनोबल प्राप्त हुआ । मेरे प्रिय मित्रों तथा सगे-सम्बन्धियों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनसे मुझे काफी प्रेरणा एवं बल मिला है ।

इस अवसर पर मैं अपने पूज्यनीय स्वर्गीय पिता जी को स्मरण किये बिना नहीं रह सकती हूँ जिनकी प्रेरणा एवं आशीष मेरे शोध कार्य के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं । काश ! वे आज होते और मेरे इस प्रयास के साक्षी बनते - उनकी स्मृति के प्रति नि:शेष प्रणाम ।

रीना जोस

हिन्दी विभाग,
श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय,
कालडी, पिन ६८३५७४
तारीख : सितम्बर, २००२